

भवानीसहस्रनामावली

भवानीसहस्त्रनामावली

प्रकाशक :–

प्रेमनाथ शास्त्री

मूल्य : 15 रु०

लक्ष्मी प्रिंटिंग वर्कस
लाल कुआं, देहली-6

पुष्पार्चन

इष्टदेव को सन्तुष्ट करने, मानसिक शान्ति, तथा हर मनोकामना सिद्धि के लिए पुष्पार्चन एक सरल तथा सुगम मार्ग है, हम जब भी चाहें- हर एक व्रत महोत्सव, पर्व अथवा जन्म दिन आदि पर जब हम कोई महान् यज्ञ करने में असमर्थ हूँ तो अवश्य पुष्पार्चन रूपी यज्ञ का प्रोग्राम बनायें।

विष्णु भगवान् ने शंकर भगवान् को सन्तुष्ट कराने के लिए **"सहस्त्रपुष्पार्चन्"** किया परन्तु अन्त में हजार पुष्प में एक कम होने पर भक्ति के आवेश में अपना नेत्रकमल हजारवें पुष्प के रूप में अर्पण किया, जिस के फलस्वरूप विष्णु को भगवान् शंकर से सुदर्शनचक्र प्राप्त हुआ।

पुष्पदन्ताचार्य ने फूल न मिलने पर फूलों के स्थान पर अपने 32 दांत पुष्पार्चन के रूप में अर्पण करते हुये महिम्नस्तोत्र के 32 श्लोकों का उच्चारण किया, भगवद्गीता में भगवान् कहते हैं **"पत्रं पुष्पं फलं तोयं"** इन प्रमाणों से स्पष्ट है पुष्पार्चन का पूजा विधान भारतीय पूजा क्रम में प्राचीन काल से प्रचलित है।

सस्त्रपुष्पार्चन विधिः-

इस पूजा में इष्ट देवता के सहस्त्रनाम के साथ आरम्भ में **"ॐ"** और अन्त में **"नमः"** जोड़कर एक-एक नाम से इष्टदेव पर पुष्प चढ़ाया जाता है, इस पूजा के लिये पुष्प पर्याप्तमात्रा में होने चाहिये (पुष्प की पत्तियाँ अलग अलग करके पूजा में प्रयोग न करें, फूल ख़ण्डित ना हो) पुष्पार्चन के लिये किसी कमरे में स्वच्छ आसन बिछायें, जहाँ सभी भक्तजन सामूहिक रूप से पूजा में सम्मिलित हो सकें, जो पूजा का मुख्यकर्त्ता अथवा यजमान होगा उसको चाहिये पद्मासन में बैठकर अपने सामने इष्टदेव की मूर्ति उस ढंग से रखे ताकि आप को फूल अर्पण करने में कोई रुकावट न पड़े पूजा के आरम्भ पर रत्नदीप तथा धूप आदि जलाकर इष्टदेव की मूर्ति को तिलक लगाकर फूलों की मालाओं से सजाइये, पहले आप (यजमान) धूपदीप करे जो इसी पुस्तक में अलग दर्ज है, पूजा में सम्मिलित होने वालों में से जो सहस्त्रनामावली का उच्चारण कर सके एक एक नाम के

आरम्भ में "ॐ" और अन्त में "नमः" जोड़कर इष्टदेवता पर फूल चढ़ायें जैसे **ॐ महाविद्यायैः नमः, ॐ जगत् मात्रेः नमः "ॐ नारायणाय नमः" ॐ शिवाय नमः"** जो भक्तजन पूजा में सम्मिलित होंगे वे भी हरनाम के साथ **"नमः"** का सामूहिक रूप से उच्चारण किया करें। यज्ञ में स्वाहा, पुष्पार्चन में नमः का प्रयोग होता है।

हर 100 वीं पुष्पांजलि अर्पण करने के समय इष्टदेव का वैदिक मन्त्र अवश्य पढें जो इसी पुस्तक में दर्ज है।

हजारवीं पुष्पाँजलि डालते समय सभी भक्त खड़े होकर वैदिकमन्त्र और इष्टदेव का कोई श्लोक पढ़कर अन्तिम पुष्पांजलि श्रद्धा से अर्पण करके तर्पण करें—जैसा कि पूजाविधि में दर्ज है आरती आदि करके प्रप्युन करके प्रसाद बाटें।

धूपदीप विधिः

पूजा के लिये रखे गये निर्माल्य के पात्र में जल की धारा डालते हुये पढें :—
ॐ अस्य श्री–आसन–शोधन–मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ–ऋषिः सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता–आसन–शोधने विनियोगः।

पृथ्वी माता को नमस्कार करते हुए पढें :—**पृथ्विवी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।**

आसन के रूप में पृथ्वी माता को दर्भ अथवा फूल अर्पण करते हुये पढें :—
ध्रुवा द्यौर्–ध्रुवा–पृथ्वी, ध्रवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वम्–इदं जगत् ध्रुवो राजा विशाम्–असि। तिलक–फूल–अर्घ्यं चढाते हुये पढें :—
प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः। नमस्कार करते हुए पढें :— **शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न–वदनं ध्याये सर्व–विघ्नोप–शान्तये। अभि–प्रीतार्थ–सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सैरैर्–अपि। सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधि–पतये नमः।**

गुरुः–ब्रह्मा, गुरुः–विष्णुः गुरुः–साक्षात्–महेश्वरः। गुरुर्–एव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरु–वे नमः।। ॐ गुरवे नमः, परम गुरवे

नमः, पर-मेष्ठिने गुरवे नमः, परमा-चार्याय नमः आदि सिद्धिभ्यो नमः

अंग न्यास-कीजिये अंगन्यास करके चारों दिशाओं की ओर तिल फँकते हुये पढें:-

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता, ये भूता विघ्नकर्तारः-ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

प्राणायाम कीजिये, प्राणायाम करके मुँह और पैरों को छिडकते हुये पढें :-

तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव समानानां भवति मानः, शंस्योर्-अर-रुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका अंगुली के ऊपर वाले पर्व पर पवित्र-धारण करते हुये पढें :-

वसोः पवित्रम्-असि शतधांर वसूनां पवित्रम्-असि, सहस्त्र-धारम्-अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः। जंग चावल आदि लाकर तिलक करना

अपने आपको तिलक अक्षत धूप चढ़ाते हुये पढें :-

परमात्मने पुरु-षोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आधार-शक्त्यै समाल-भनं गन्धो नमः-अर्घो नमः पुष्पं नमः।

चोंग (धीप) को तिलक अक्षत फूल चढाते हुये पढें :-

"स्वप्रकाशो-महादीपः सर्वत-स्तिमिरा-पहः। प्रसीद नम गोविन्द दीपोयं प्रतिकल्पितः। भो दीप देव-रूवपस्त्वं कर्म-समाप्तिः याक्त् स्यात्-तावत् त्वं स्थिरो भव।

सूर्यदेवता के निमित्त निर्माल्यपात्र में तिलक अक्षत फूल डालते हुये पढें :-

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः-भ्रतापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः-तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय आधार-शक्त्यै दीप-धूप-संकल्पात्-सिद्धिर-अस्तु दीपो नमः धूपो नमः। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्यतावत्-तिथौ-अद्य .... मासस्य ..... पक्षस्य तिथौ ..... वासरे दीपोनमः धूपोनमः।

भवानी नामसहस्त्र स्वाहाकार पूजन विधि

"ॐ नमों भवान्यै"

ॐ अरि-शंख-कृपाण-खेट-बाणान्! सुधनुः शूलक-तर्जनी दधाना। भवतां महिषोत्तमाङ्ग संस्था नवदूर्वा-सदृशी श्रियेस्तु दुर्गा।।

ॐ शंख-त्रिशूल-शर-चापकरां त्रिनेत्रां तिग्मेतरांशु-कलया विलसत्-किरीटाम्। सिंह-स्थिताम्-असुर-सिद्धनुतां च दुर्गां दूर्वानिभां दुरित-दुःखहरां नमामि (1) ॐ अकुल-कुल-पतंती चक्रमध्ये स्फुरंती मधुर-मधु पिवंती कंटकान्-भक्षयंती। दुरितम्-अपहरंती साधकान्-पोषयन्ती जयति जगति देव सुन्दरी क्रीडयंती (2) चतु-र्भुजाम्-एकवक्त्रां पूर्णेन्दु-वदन-प्रभाम्। खड्गशक्ति- धरां देवीं वरदा-भयपाणिकाम् (3) प्रेत-संस्थां महारौद्रीं भुजगेनो-पवर्तिनीम्। भवानीं कालसंहार-बद्धमुद्रा-विभूषिताम् (4) जगत्-स्थितिकरीं ब्रह्म-विष्णु-रुद्रादिभिः सुरैः। स्तुतां तां परमेशानीं नौम्यहं विघ्न-हारिणीम् (5) ।।ॐ नमो भवान्यै।। ॐ कैलाश शिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम्। ध्यानोरतम्-आसीनं प्रसन्न-मुखपंकजम् (6) सुरासुर-शिरो-रत्न-रंजितांघ्रि-युगं प्रभुम्। प्रणम्य शिरसा नंदी बद्धांजलिर्-अभाषत (7) ।।श्री नंदिकेश्वर-उवाच।। देव-देव जगत्-नाथ संशयोस्ति महान्-मम। रहस्यम्-एकम-इच्छामि प्रष्टुं त्वां भक्त-वत्सल (8) देवताया:-त्वया कस्या: स्तोत्रम्-एतत्-दिवानिशम्। पठ्यते-विरतं नाथ त्वत्तः किम्-अपरं महत् (9) इति पृष्टः-तदा देवा नंदिकेन जगत्-गुरुः प्रोवाच-भगवान्-एको विकसन्-नेत्र पंकजः (10)

श्रीभगवन्-उवाच

साधु-साधु गणश्रेष्ठ पृष्टवान्-असि-मां च यत। स्कंदस्यापिं च यत्-गोप्यं रहस्यं कथयामि तत् (11) पुरा कल्पक्षये लोकान् सिसृक्षु-मूढ़-चेतनाः। गुणत्रय-मयी शक्तिर्-मूल प्रकृति-संज्ञिता (12) तस्याम्-अहं समुत्पन्नः-तत्त्वैर्-तैर्-महदादिभिः। चेतनेति ततः शक्तिर्-मां काप्या-लिंग्य तस्थुषी (13) हेतुः संकल्प-जालस्य मनोधिष्ठायिनी शुभा इच्छेति परमा शक्तिर्-उन्-मिमील ततः परम् (14) ततो वाक्-इति विख्याता शक्तिः शब्दमयी पुरा। प्रादुर्-आसीत्-जगत्-माता वेदमाता सरस्वती (15) ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री कौमारी पार्वती शिवा। सिद्धिदा-बुद्धिदा शंता सर्वमंगल-दायिनी (16) तयैयत्-सृज्यते विश्वम्-अनाधारं च धार्यते। तयैतत्-पाल्यते सर्वं तस्याम्-एव प्रलीयते (17) अर्चिता-प्रणता ध्याता सर्व-भाव-विनिश्चिता। आराधिता स्तुता सैव सर्वसिद्धि-प्रदायिनी (18) तस्या-अनुग्रहात्-एव ताम्- एव स्तुतवान्-अहम्। सहस्त्रैर्-नामभिर्-दिव्यैः-त्रैलोक्य-प्राणि पूजितैः (19) स्तवेनानेन संतुष्टा माम्-एव प्रविवेश सा। तत् आरभ्य मया प्राप्तम्-ऐश्वर्यं पदम्-उत्तमम् (20) तत् प्रभावात् मया सृष्टं जगत्-एतत्-चराचरम्। ससुरा-सुर-गंधर्व यक्षराक्षस-मानवम् (21) सपन्नगं ससमुद्रं सशैल-वनकाननम्। सराशि-ग्रह-नक्षत्रं पंच-भूत-गुणान्वितम् (22) नंदि-न्राम-सहस्त्रेण-स्तवेनानेन सर्वदा। स्तुवे परापरां शक्तिं ममानुग्रह-कारिणीम् (23) इत्युक्त्वोप-रतं देवं चराचर-गुरुं विभुम्। प्रणम्य शिरसा नंदी प्रोवाच परमेश्वरम् (24)

श्री नंदिकेश्वर उवाच

भगवन्-देव-देवेश लोकनाथ जगत्-पते। भक्तोस्मि तव दासोस्मि प्रसादः क्रियतां मयि (25) देव्याः स्तवम्-इमं पुण्यं दुर्लभ-यत्-सुरैर्-अपि। श्रोतुम-इच्छाम्यहं देव प्रभावम्-अपि चास्य तु (26)

श्री भगवान् उवाच

शृणु नंदिन् महाभाग स्तव-राजम्-इमं शुभम। सहस्त्रैर्-नामभिर्-दिव्यैः सिद्धिदं सुखमोक्षदम् (27) शुचिभिः प्रातर्-उत्थाय पठितव्यं समाहितैः।। त्रिकालं श्रद्धया युक्तैर्-नातः परतः स्तवः (28) ॐ अस्य श्रीभवानी-नाम-सहस्त्र-स्त-वराजस्य श्रीभगवान्-महादेव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। आद्या शक्तिः। श्रीभगवती भवानी देवता। ह्रीं बीजम्। श्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकम् आत्मनो वांगमनः कायोपार्जित पाप-निवारणार्थं श्री भगवती भवानी-सन्तोषनार्थं सकलकामना सिद्धचर्थे पाठे विनियोगः।

(करन्यास) ॐ एकवीरायै अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ महामायायै तर्जनीभ्यां नमः ॐ पार्वत्यै मध्यमाभ्यां नमः। ॐ गिरिशप्रियायै अनामिकाभ्यं नमः ॐ गौर्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ करालिन्यै करतल-कर पृष्ठाभ्यं-नमः।

(अङ्गन्यासः) ॐ एकवीरायै हृदयाम नमः ॐ महामायायै शिरसे स्वाहा, ॐ पार्वत्यै शिखायै वषट्, ॐ गिरिश प्रियायै कवचाय हुम्, ॐ गौर्यै नेत्र-त्रयाय वौषट्, ॐ करालिन्यै-अस्त्राय फट्

अथ ध्यानम्

अर्धेन्दु-मौलिम्-अमलाम्-अमराभिन्द्याम् अम्भोज-पाश-सृणि-रक्तकपाल-हस्ताम्। रक्तांग-राग-रशना भरणां त्रिनेत्राम्, ध्याये शिवस्य वनितां-मधु-विह्वलांगीम्। ॐ बालार्क मण्डलाभास चतुर्-बाहुं त्रिलोचनाम्। पाशांकुश-शरां चापं धारयंती शिवां भजे। ॐ बिजत्रयाय विद्महे, स्वाहा, तत्प्रधानाय धीमहि स्वाहा, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् स्वाहा। बीजत्रयाय विद्महे, तत्प्रधानाय धीमहि स्वाहा, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् स्वहा, बीजत्रयाय विद्महे, तत्प्रधानाय धीमहि, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् स्वाहा।

तर्पण करते हुये पढ़ें

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी। शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना बाग्वादिनी भैरवी ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि।। अनेन मस्त्रापाठेन आत्मनो वाङ् नःकायोपार्जित पाप निवारणार्थं श्रीइष्टदेवीप्रीत्यर्थं भगवती अमा कामा चार्वङ्गी टङ्कधारिणी तारा पार्वती यक्षिणी श्री शारिका भगवती श्रीशारदाभगवती श्रीमहाराज्ञी भगवती श्रीज्वालाभगवती व्रीडाभगवती वैखरीभगवती वितस्ताभगवती गङ्गाभगवती यमुनाभगवती कालिकाभगवती सिद्धलक्ष्मीः महालक्ष्मीः महात्रिपुरसुन्दरी सहस्त्रनास्त्री देवी भवानी सपरिवारा सवाहना सायुधा साङ्गा प्रीयतां प्रीतास्तु।

फूल अग्नि में डालते हुये पढ़ें :-

पुण्यं सहस्त्रनामेदमम्बाया रूद्रभाषितम्। चतुर्वर्गप्रदं सत्यं नन्दिकेन प्रकाशितम्।। नातः परतरो मन्त्रों नातः परतरः स्तवः।

नातः परतरा विद्या तीर्थं नातः परं परम्। ते धन्याः कृतपुण्यास्ते त एव भुवि पूजिताः। एकभाबं मुदा नित्यं ये-र्चयन्ति महेश्वरीम्। देवतानां देवता या ब्रह्माद्यैर्या च पूजिता। भूयात्सा वरदा लोके साधूनां विश्वमङ्गला। एतामेव पुराराध्य विद्यां त्रिपुरभैरवीम्। त्रैलोक्यमोहनं रूपमकार्षीद्भगव-द्धरिः

देवी स्तुतिः

आनन्द-सुन्दर-पुरन्द्र-मुक्त-माल्यं मौलौ हठेन निहितं महिषा सुरस्य। पादाम्बुजं भवतु के विजयाय मंजु, मंजीर-शिंजित-मनोहरम्-अम्बिकाया (1) उद्दाम-काम-परमार्थ-सरोज-षण्ड चण्ड-द्युति-द्युतिम्-उपासित-षट्-प्रकाराम्। मोह-द्विपेन्द्र-कदनो-द्यत बोध-सिंह लीलागुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि (2) रे मूढाः किम्-अयं वृथैव तपसा काया परि-क्लिश्यते यज्ञै-र्वा बहुदक्षिणैः किम्-इतरे रिक्ती क्रियन्ते गृहाः। भक्तिः-चेप्त्-अविनाशिनी भगवती पादद्वयी सेव्यताम् उन्निद्रा-म्बु-रुहात-पत्र-सुभगा लक्ष्मीः पुरो धावति (4) शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं न चेत्-एवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुम्-अपि। अतः त्वाम्-आराध्यां हरि-हर-विरिंच्यादिभिर्-अपि प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथम्-अकृतपुण्यः प्रभवति (5) माता भवानी च पिता भवानी बन्धु-र्भवानी च गुरु-र्भवानी विद्या भवानी द्रविणं भवानी यतो-यतो यामि ततो भवानी (6) बीजैःसप्तभिर्-उज्ज्वला-कृतिर-असौ, या सप्त-सप्ति-द्युतिः सप्तर्षि-प्रणतांघ्रि-पंकजयुगा या सप्तलोकार्ति-हत। काश्मीर-प्रवरेश मध्य-नगरे प्रद्युम्न-पीठे स्थिता देवी-सप्तक-संयुता भगवती श्रीशारिका पातु नः (7)

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ महाविद्यायै स्वाहा

ॐ जगन्मात्रे स्वाहा

ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा

ॐ शिवप्रियायै स्वाहा

ॐ विष्णुमायायै स्वाहा

ॐ शुभायै स्वाहा

ॐ शान्तायै स्वाहा

ॐ सिद्धायै स्वाहा

ॐ सिद्धसरस्वत्यै स्वाहा

ॐ क्षमायै स्वाहा

ॐ कान्त्यै स्वाहा

ॐ प्रभायै स्वाहा

ॐ ज्योत्स्नायै स्वाहा

ॐ पार्वत्यै स्वाहा

ॐ सर्वमङ्गलायै स्वाहा

ॐ हिङ्गुलायै स्वाहा

ॐ चण्डिकायै स्वाहा

ॐ दान्तायै स्वाहा

ॐ पद्मायै स्वाहा

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा

ॐ हरिप्रियायै स्वाहा

ॐ त्रिपुरानन्दिन्यै स्वाहा

ॐ नन्दायै स्वाहा

ॐ सुनन्दायै स्वाहा

ॐ सुर-वन्दितायै स्वाहा

ॐ यज्ञविद्यायै स्वाहा

ॐ महामायायै स्वाहा

ॐ वेदमात्रे स्वाहा

ॐ सुधाधृत्यै स्वाहा

ॐ प्रीतिप्रियायै स्वाहा

ॐ प्रसिद्धायै स्वाहा

ॐ मृडान्यै स्वाहा

ॐ विन्ध्यवासिन्यै स्वाहा

ॐ सिद्धविद्यायै स्वाहा

ॐ महाशक्त्यै स्वाहा

ॐ पृथ्व्यै स्वाहा

ॐ नारदसेवितायै स्वाहा

ॐ पुरुहूतप्रियायै स्वाहा

ॐ कान्तायै स्वाहा

ॐ कामिन्यै स्वाहा

ॐ पद्मलोचनायै स्वाहा

ॐ प्रह्लादिन्यै स्वाहा

ॐ महामात्रे स्वाहा

ॐ दुर्गायै स्वाहा

ॐ दुर्गतिन्नाशिन्यै स्वाहा

ॐ ज्वालामुख्यै स्वाहा

ॐ सुगोत्रायै स्वाहा

ॐ ज्योतिषे स्वाहा

ॐ कुमुद्हासिन्यै स्वाहा

ॐ दुर्गमायै स्वाहा

ॐ दुर्लभायै स्वाहा

ॐ विद्यायै स्वाहा

ॐ स्वर्गतये स्वाहा

ॐ पुर-वासिन्यै स्वाहा

ॐ अपर्णायै स्वाहा

ॐ शम्बरीम्मायायै स्वाहा

ॐ मदिरायै स्वाहा

ॐ मृदुहासिन्यै स्वाहा

ॐ कुलवागीश्वर्यै स्वाहा

ॐ नित्यानित्यक्लिन्नायै स्वाहा

ॐ कृशोदर्यै स्वाहा

ॐ कामेश्वर्यै स्वाहा

ॐ नीलायै स्वाहा

ॐ भीरुण्डायै स्वाहा

ॐ वह्निवासिन्यै स्वाहा

ॐ लम्बोदर्यै स्वाहा

ॐ महाकाल्यै स्वाहा

ॐ विद्याविद्येश्वर्यै स्वाहा

ॐ नरेश्वर्यै स्वाहा

ॐ सत्यायै स्वाहा

ॐ सर्वसौभाग्य,वर्धिन्यै स्वाहा

ॐ सङ्कर्षण्यै स्वाहा

ॐ नारसिंह्यै स्वाहा

ॐ वैष्णव्यै स्वाहा

ॐ महोदर्यै स्वाहा

ॐ कात्यायन्यै स्वाहा

ॐ चम्पायै स्वाहा

ॐ सर्वसम्पत्ति,कारिण्यै स्वाहा

ॐ नारायण्यै स्वाहा

ॐ महानिद्रायै स्वाहा

ॐ योगनिद्रायै स्वाहा

ॐ प्रभावत्यै स्वाहा

ॐ प्रज्ञा,पारमितायै स्वाहा

ॐ प्रज्ञायै स्वाहा

ॐ तारायै स्वाहा

ॐ मधुमत्यै स्वाहा

ॐ मधवे स्वाहा

ॐ क्षीरार्णवसुतायै स्वाहा

ॐ हालायै स्वाहा

ॐ कालिकायै स्वाहा

ॐ सिंहवाहनायै स्वाहा

ॐ ॐकारायै स्वाहा

ॐ सुधाकारायै स्वाहा

ॐ चेतनायै स्वाहा

ॐ कोपनायै स्वाहा

ॐ कृत्यै स्वाहा

ॐ अर्धबिन्दुधरायै स्वाहा

ॐ धीरायै स्वाहा

ॐ विश्वमात्रे स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ कलावत्यै स्वाहा १००

ॐ पद्मावत्यै स्वाहा

ॐ सुवस्त्रायै स्वाहा

ॐ प्रबुद्धायै स्वाहा

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

ॐ कुण्डासनायै स्वाहा

ॐ जगद्धात्र्यै स्वाहा

ॐ बुद्धमात्रे स्वाहा

ॐ जिनेश्वर्यै स्वाहा

ॐ जिनमात्रे स्वाहा

ॐ जिनेन्द्रायै स्वाहा

ॐ शारदायै स्वाहा

ॐ हंसवाहनायै स्वाहा

ॐ राज्यलक्ष्म्यै स्वाहा

ॐ वषट्कारायै स्वाहा

ॐ सुधाकारायै स्वाहा

ॐ सुधात्मिकायै स्वाहा

ॐ राजनीत्यै स्वाहा

ॐ त्रयीवार्तायै स्वाहा

ॐ दण्डनीत्यै स्वाहा

ॐ क्रियावत्यै स्वाहा

ॐ सद्भूतये स्वाहा

ॐ तारिण्यै स्वाहा

ॐ श्रद्धायै स्वाहा

ॐ सद्गतये स्वाहा

ॐ सत्परायणायै स्वाहा

ॐ सिन्धवे स्वाहा

ॐ मन्दाकिन्यै स्वाहा

ॐ गङ्गायै स्वाहा

ॐ यमुनायै स्वाहा

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

ॐ गोदावर्यै स्वाहा

ॐ विपाशायै स्वाहा

ॐ कावेर्यै स्वाहा

ॐ शतद्रुदायै स्वाहा

ॐ सरयवे स्वाहा

ॐ चन्द्रभागायै स्वाहा

ॐ कौशिक्यै स्वाहा

ॐ गण्डक्यै स्वाहा

ॐ शुचये स्वाहा

ॐ नर्मदायै स्वाहा

ॐ कर्मनाशायै स्वाहा

ॐ चर्मण्वत्यै स्वाहा

ॐ देविकायै स्वाहा

ॐ वेत्रवत्यै स्वाहा

ॐ वितस्तायै स्वाहा

ॐ वरदायै स्वाहा

ॐ नरवाहनायै स्वाहा

ॐ सत्यै स्वाहा

ॐ पतिव्रतायै स्वाहा

ॐ साध्व्यै स्वाहा

ॐ सुचक्षुषे स्वाहा

ॐ कुण्डवासिन्यै स्वाहा

ॐ एकचक्षुषे स्वाहा

ॐ सहस्त्राक्ष्यै स्वाहा

ॐ सुश्रेणये स्वाहा

ॐ भगमालिन्यै स्वाहा

ॐ सेनाश्रेणये स्वाहा

ॐ पताकायै स्वाहा

ॐ सुव्यूहायै स्वाहा

ॐ युद्धकाङ्क्षिण्यै स्वाहा

ॐ पताकिन्यै स्वाहा

ॐ दयारम्भायै स्वाहा

ॐ विपञ्च्यै स्वाहा

ॐ पञ्चमप्रियायै स्वाहा

ॐ परापरकलकान्तायै स्वाहा

ॐ त्रिशक्तये स्वाहा

ॐ मोक्षदायिन्यै स्वाहा

ॐ ऐन्द्यै स्वाहा

ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा

ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा

ॐ कौमार्यै स्वाहा

ॐ कुलवासिन्यै स्वाहा

ॐ इच्छायै स्वाहा

ॐ भगवत्यै स्वाहा

ॐ शक्तये स्वाहा

ॐ कामधेनवे स्वाहा

ॐ कृपावत्यै स्वाहा

ॐ वज्रायुधायै स्वाहा

ॐ वज्रहस्तायै स्वाहा

ॐ चण्डच्चै स्वाहा

ॐ चण्डपराक्रमायै स्वाहा

ॐ गौर्यै स्वाहा

ॐ सुवर्णवर्णायै स्वाहा

ॐ स्थितिसंहार

कारिण्यै स्वाहा

ॐ एकानेकायै स्वाहा

ॐ महेज्यायै स्वाहा

ॐ शतबाहवे स्वाहा

ॐ महाभुजायै स्वाहा

ॐ भुजङ्गभूषणायै स्वाहा

ॐ भूषायै स्वाहा

ॐ षट्चक्रक्रमवासिन्यै स्वाहा

ॐ षट्चक्रभेदिन्यै स्वाहा

ॐ शूरायै स्वाहा

ॐ कायस्थायै स्वाहा

ॐ कायवर्जितायै स्वाहा

ॐ सुस्मितायै स्वाहा

ॐ सुमुख्यै स्वाहा

ॐ क्षामायै स्वाहा

ॐ मूलप्रकृतये स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ ईश्वर्यै स्वाहा २००

ॐ अजायै स्वाहा

ॐ बहुवर्णायै स्वाहा

ॐ पुरुषार्थप्रवर्तिन्यै स्वाहा

ॐ रक्तायै स्वाहा

ॐ नीलायै स्वाहा

ॐ सितायै स्वाहा

ॐ श्यामायै स्वाहा

ॐ कृष्णायै स्वाहा

ॐ पीतायै स्वाहा

ॐ कर्बुरायै स्वाहा

ॐ क्षुधायै स्वाहा

ॐ तृष्णायै स्वाहा

ॐ जरायै स्वाहा

ॐ वृद्धायै स्वाहा

ॐ तरुण्यै स्वाहा

ॐ करुणालयायै स्वाहा

ॐ कलायै स्वाहा

ॐ काष्ठायै स्वाहा

ॐ मुहूर्तायै स्वाहा

ॐ निमेषायै स्वाहा

ॐ कालरूपिण्यै स्वाहा

ॐ सुवर्णरसनाङ्गासायै स्वाहा

ॐ चक्षुःस्पर्शवत्यै स्वाहा

ॐ रसायै स्वाहा

ॐ गन्धप्रियायै स्वाहा

ॐ सुगन्धायै स्वाहा

ॐ सुस्पर्शायै स्वाहा

ॐ मनोगतये स्वाहा

ॐ मृगनाभये स्वाहा

ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा

ॐ कर्पूरामोदधारिण्यै स्वाहा

ॐ पद्मयोनये स्वाहा

ॐ सुकेश्यै स्वाहा

ॐ सुलिङ्गायै स्वाहा

ॐ भगरूपिण्यै स्वाहा

ॐ योनिमुद्रायै स्वाहा

ॐ महामुद्रायै स्वाहा

ॐ खेचर्यै स्वाहा

ॐ खगगामिन्यै स्वाहा

ॐ मधुश्रियै स्वाहा

ॐ माधवीवल्ल्यै स्वाहा

ॐ मधुमत्तायै स्वाहा

ॐ मदोद्धतायै स्वाहा

ॐ मातङ्ग्यै स्वाहा

ॐ शुकहस्तायै स्वाहा

ॐ पुष्पबाणायै स्वाहा

ॐ इक्षुचापिन्यै स्वाहा

ॐ रक्ताम्बरधरायै स्वाहा

ॐ क्षीबायै स्वाहा

ॐ रक्तपुष्पावतंसिन्यै स्वाहा

ॐ शुभ्राम्बरधरायै स्वाहा

ॐ धीरायै स्वाहा

ॐ महाश्वेतायै स्वाहा

ॐ वसुप्रियायै स्वाहा

ॐ सुवेण्यै स्वाहा

ॐ पद्महस्तायै स्वाहा

ॐ मुक्ताहारविभूषणायै स्वाहा

ॐ कर्पूरामोदनिःश्वासायै स्वाहा

ॐ पद्मिन्यै स्वाहा

ॐ पद्ममन्दिरायै स्वाहा

ॐ खड्गिन्यै स्वाहा

ॐ चक्रहस्तायै स्वाहा

ॐ भुसुण्डयै स्वाहा

ॐ परिघायुधायै स्वाहा

ॐ चापिन्यै स्वाहा

ॐ पाशहस्तायै स्वाहा

ॐ त्रिशूलवरधारिण्यै स्वाहा

ॐ सुबाणायै स्वाहा

ॐ शक्तिहस्तायै स्वाहा

ॐ मयूरवरवाहनायै स्वाहा

ॐ वरायुधधरायै स्वाहा

ॐ वीरायै स्वाहा

ॐ वीरपानमदोत्कटायै स्वाहा

ॐ वसुधायै स्वाहा

ॐ वसुधारायै स्वाहा

ॐ जयायै स्वाहा

ॐ शाकम्भर्यै स्वाहा

ॐ शिवायै स्वाहा

ॐ विजयायै स्वाहा

ॐ जयन्त्यै स्वाहा

ॐ सुस्तन्यै स्वाहा

ॐ शत्रुनाशिन्यै स्वाहा

ॐ अन्तर्वत्न्यै स्वाहा

ॐ वेदशक्तये स्वाहा

ॐ वरदायै स्वाहा

ॐ वरधारिण्यै स्वाहा

ॐ शीतलायै स्वाहा

ॐ सुशीलायै स्वाहा

ॐ बालग्रहविनाशिन्यै स्वाहा

ॐ कुमार्यै स्वाहा

ॐ वसुपर्णायै स्वाहा

ॐ कामाख्यायै स्वाहा

ॐ कामवन्दितायै स्वाहा

ॐ जालन्धरधरायै स्वाहा

ॐ अनन्तायै स्वाहा

ॐ कामरूपनिवासिन्यै स्वाहा

ॐ कामबीजवत्यै स्वाहा

ॐ सत्यायै स्वाहा

ॐ सत्यधर्मपरायणायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ स्थूलमार्गस्थितायै
स्वाहा ३००

ॐ सूक्ष्मायै स्वाहा

ॐ सूक्ष्मबुद्धिप्रबोधिन्यै स्वाहा

ॐ षट्कोणायै स्वाहा

ॐ त्रिकोणायै स्वाहा

ॐ त्रिनेत्रायै स्वाहा

ॐ वृषभध्वजायै स्वाहा

ॐ वृषप्रियायै स्वाहा

ॐ वृषारूढायै स्वाहा

ॐ महिषासुरघातिन्यै स्वाहा

ॐ सुम्भदर्पहरायै स्वाहा

ॐ दीप्तायै स्वाहा

ॐ दीप्तपावक-
सन्निभायै स्वाहा

ॐ कपालभूषणायै स्वाहा

ॐ काल्यै स्वाहा

ॐ कपालमालभारिण्यै स्वाहा

ॐ कपालकुण्डलायै स्वाहा

ॐ दीर्घायै स्वाहा

ॐ शिवदूत्यै स्वाहा

ॐ घनध्वनये स्वाहा

ॐ सिद्धिदायै स्वाहा

ॐ बुद्धिदायै स्वाहा

ॐ नित यायै स्वाहा

ॐ सत्य मार्गप्रबोधिन्यै स्वाहा

ॐ कम्बुग्रीवायै स्वाहा

ॐ वसुमत्यै स्वाहा

ॐ छत्रच्छायाकृतालयायै–स्वाहा

ॐ जगद्गर्भायै स्वाहा

ॐ कुण्डलिन्यै स्वाहा
ॐ भुजगाकार,शायिन्यै स्वाहा
ॐ प्रोल्लसत्सप्तपद्मायै स्वाहा
ॐ नाभिनाल,मृणालिन्यै स्वाहा
ॐ मूलाधारायै स्वाहा
ॐ निराकारायै स्वाहा
ॐ वह्निकुण्ड-
कृतालयायै स्वाहा
ॐ वायुकुण्डसुखासीनायै
स्वाहा
ॐ निराधारायै स्वाहा
ॐ निराश्रयायै स्वाहा
ॐ श्वासोच्छ्वास,गतये स्वाहा
ॐ जीवा,गा-हिण्यै स्वाहा

ॐ वह्निसंश्रयायै स्वाहा

ॐ वल्लीतन्तुसमुत्थानायै स्वाहा

ॐ षड्रसास्वा-
दलोलुपायै स्वाहा

ॐ तपस्विन्यै स्वाहा

ॐ तपःसिद्धये स्वाहा

ॐ तपसःसिद्धिदायिन्यै स्वाहा

ॐ तपोनिष्ठायै स्वाहा

ॐ तपोयुक्तायै स्वाहा

ॐ तपिस्यै स्वाहा

ॐ तपःप्रियायै स्वाहा

ॐ सप्तधातुमय्यै स्वाहा

ॐ मूर्त्यै स्वाहा

ॐ सप्तधात्वन्तराश्रयायै स्वाहा

ॐ देहपुष्टये स्वाहा

ॐ मनःपुष्टये स्वाहा

ॐ अन्नपुष्टये स्वाहा

ॐ बलोद्धतायै स्वाहा

ॐ ओषधये स्वाहा

ॐ वैद्यमात्रे स्वाहा

ॐ द्रव्यशक्तये स्वाहा

ॐ प्रभावत्यै स्वाहा

ॐ वैद्यायै स्वाहा

ॐ वैद्यचिकित्सायै स्वाहा

ॐ सुपथ्यायै स्वाहा

ॐ रोगनाशिन्यै स्वाहा

ॐ मृगयायै स्वाहा

ॐ मृगमांसादायै स्वाहा

ॐ मृगत्वचे स्वाहा

ॐ मृगलोचनायै स्वाहा

ॐ वागुरायै स्वाहा

ॐ बन्धुरूपायै स्वाहा

ॐ वधरूपायै स्वाहा

ॐ वधोद्धतायै स्वाहा

ॐ वन्द्यै स्वाहा

ॐ वन्दिस्तुतायै स्वाहा

ॐ कारायै स्वाहा

ॐ काराबन्धविमोचिन्यै स्वाहा

ॐ शृङ्खलायै स्वाहा

ॐ खलहायै स्वाहा

ॐ विद्युते स्वाहा

ॐ दृढबन्धविमोचिन्यै स्वाहा

ॐ अम्बिकायै स्वाहा

ॐ अम्बालिकायै स्वाहा

ॐ अम्बायै स्वाहा

ॐ स्वक्षायै स्वाहा

ॐ साधुजनार्चितायै स्वाहा

ॐ कौलिक्यै स्वाहा

ॐ कुलविद्यायै स्वाहा

ॐ सकुलायै स्वाहा

ॐ कुलपूजितायै स्वाहा

ॐ कालचक्रभ्रमायै स्वाहा

ॐ भ्रान्तायै स्वाहा

ॐ विभ्रमायै स्वाहा

ॐ भ्रमनाशिन्यै स्वाहा

ॐ वातात्यै स्वाहा

ॐ मेघमालायै स्वाहा

ॐ सुवृष्ट्यै स्वाहा

ॐ सस्यवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ अकारायै स्वाहा

ॐ इकारायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ उकारायै स्वाहा ४००

ॐ ऐकाररूपिण्यै स्वाहा

ॐ ह्रींकारीबीजरूपायै स्वाहा

ॐ क्लींकाराम्बरवासिन्यै स्वाहा

ॐ सर्वाक्षरमयीमूर्त्यै स्वाहा

ॐ अक्षरायै स्वाहा

ॐ वर्णमालिन्यै स्वाहा

ॐ सिन्दूरारुणवर्णायै स्वाहा

ॐ सिन्दूरतिलकप्रियायै स्वाहा

ॐ वश्यायै स्वाहा

ॐ वश्यबीजायै स्वाहा

ॐ लोकवश्यविभाविन्यै स्वाहा

ॐ नृपवश्यायै स्वाहा

ॐ नृपसेव्यायै स्वाहा

ॐ नृपवश्यकर्यै स्वाहा

ॐ प्रियायै स्वाहा

ॐ महिष्यै स्वाहा

ॐ नृपमान्यायै स्वाहा

ॐ नृमान्यायै स्वाहा

ॐ नृपनन्दिन्यै स्वाहा

ॐ नृपधर्ममय्यै स्वाहा

ॐ धन्यायै स्वाहा

ॐ धनधान्यविवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ चतुर्वर्णमयीमूर्त्यै स्वाहा

ॐ चतुर्वर्णैःसुपूजितायै स्वाहा

ॐ सर्वधर्ममयीसिद्ध्यै स्वाहा

ॐ चतुराश्रमवासिन्यै स्वाहा

ॐ ब्राह्मण्यै स्वाहा

ॐ क्षत्रियायै स्वाहा

ॐ वैश्यायै स्वाहा

ॐ शूद्रायै स्वाहा

ॐ अवरवर्णजायै स्वाहा

ॐ वेदमार्गरतायै स्वाहा

ॐ यज्ञायै स्वाहा

ॐ वेदविश्वविभाविन्यै स्वाहा

ॐ अस्त्रशस्त्रमयी-

विद्यायै स्वाहा

ॐ वरशस्त्रास्त्रधारिण्यै

स्वाहा

ॐ सुमेधायै स्वाहा

ॐ सत्यमेधायै स्वाहा

ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा

ॐ अपराजितायै स्वाहा

ॐ गायत्र्यै स्वाहा

ॐ सत्कृतये स्वाहा

ॐ संध्यायै स्वाहा

ॐ सावित्र्यै स्वाहा

ॐ त्रिपदाश्रयायै स्वाहा

ॐ त्रिसन्ध्यायै स्वाहा

ॐ त्रिपदायै स्वाहा

ॐ धात्र्यै स्वाहा

ॐ सुपर्वायै स्वाहा

ॐ सामगायिन्यै स्वाहा

ॐ पञ्चाल्यै स्वाहा

ॐ बालिकायै स्वाहा

ॐ बालायै स्वाहा

ॐ बालक्रीडायै स्वाहा

ॐ सनातन्यै स्वाहा

ॐ गर्भाधारधरायै स्वाहा

ॐ शून्यायै स्वाहा

ॐ गर्भाशयनिवासिन्यै स्वाहा

ॐ सुरारिघातिन्यै स्वाहा

ॐ कृत्यायै स्वाहा

ॐ पूतनायै स्वाहा

ॐ तिलोत्तमायै स्वाहा

ॐ लज्जायै स्वाहा

ॐ रसवत्यै स्वाहा

ॐ नन्दायै स्वाहा

ॐ भवान्यै स्वाहा

ॐ पापनाशिन्यै स्वाहा

ॐ पट्टाम्बरधरायै स्वाहा

ॐ गीत्यै स्वाहा

ॐ सुगीत्यै स्वाहा

ॐ ज्ञान्‌लोचनायै स्वाहा

ॐ सप्त्‌सुरमध्यै स्वाहा

ॐ तन्त्र्यै स्वाहा

ॐ षडज्मध्यम्दैवतायै स्वाहा

ॐ मूर्च्छनायै स्वाहा

ॐ ग्रामसंस्थानायै स्वाहा

ॐ स्वच्छ्स्वस्थान्वासिन्यै
स्वाहा

ॐ अट्टाट्टहासिन्यै स्वाहा

ॐ प्रेतायै स्वाहा

ॐ प्रेतासन्निवासिन्यै स्वाहा

ॐ गीतनृत्यप्रियायै स्वाहा

ॐ कामायै स्वाहा

ॐ तुष्टिदायै स्वाहा

ॐ पुष्टिदायै स्वाहा

ॐ अक्षयायै स्वाहा

ॐ निष्ठायै स्वाहा

ॐ सत्यप्रियायै स्वाहा

ॐ प्रज्ञायै स्वाहा

ॐ लोकेश्यै स्वाहा

ॐ सुरोत्तमायै स्वाहा

ॐ सुविषायै स्वाहा

ॐ ज्वालिन्यै स्वाहा

ॐ ज्वालायै स्वाहा

ॐ विषमोहार्त्तिनाशिन्यै स्वाहा

ॐ विषार्यै स्वाहा

ॐ नागदमन्यै स्वाहा

ॐ कुरुकुल्लायै स्वाहा

ॐ अमृतोद्भवायै स्वाहा

ॐ भूतभीतिहरायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ रक्षायै स्वाहा५००

ॐ भूतावेशविनाशिन्यै स्वाहा
ॐ रक्षोघ्न्यै स्वाहा
ॐ राक्षस्यै स्वाहा
ॐ रात्र्यै स्वाहा
ॐ दीर्घनिद्रायै स्वाहा
ॐ दिवागतये स्वाहा
ॐ चन्द्रिकायै स्वाहा
ॐ चन्द्रकान्तये स्वाहा
ॐ सूर्यकान्तये स्वाहा
ॐ निशाचर्यै स्वाहा
ॐ डाकिन्यै स्वाहा

ॐ शाकिन्यै स्वाहा

ॐ शिष्यायै स्वाहा

ॐ हाकिन्यै स्वाहा

ॐ चक्रवाकिन्यै स्वाहा

ॐ सितासितप्रियायै स्वाहा

ॐ स्वङ्गायै स्वाहा

ॐ सुकुलायै स्वाहा

ॐ वनदेवतायै स्वाहा

ॐ गुरुरूपधरायै स्वाहा

ॐ गुर्व्यै स्वाहा

ॐ मृत्यवे स्वाहा

ॐ मार्यै स्वाहा

ॐ विशारदायै स्वाहा

ॐ महामार्यै स्वाहा

ॐ विनिन्द्रायै स्वाहा

ॐ तन्द्रायै स्वाहा

ॐ मृत्युविनाशिन्यै स्वाहा

ॐ चन्द्रमण्डलसङ्काशायै स्वाहा

ॐ चन्द्रमण्डलवासिन्यै स्वाहा

ॐ अणिमादिगुणोपेतायै स्वाहा

ॐ सुस्पृहायै स्वाहा

ॐ कामरूपिण्यै स्वाहा

ॐ अष्टसिद्धिप्रदायै स्वाहा

ॐ प्रौढायै स्वाहा

ॐ दुष्टदानवघातिन्यै स्वाहा

ॐ अनादिनिधनायै स्वाहा

ॐ पुष्टये स्वाहा

ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा

ॐ चतुर्मुख्यै स्वाहा

ॐ चतुःसमुद्रशयनायै स्वाहा

ॐ चतुर्वर्गफलप्रदायै स्वाहा

ॐ काशपुष्पप्रतीकाशायै स्वाहा

ॐ शरत्कुमुदलोचनायै स्वाहा

ॐ भूतायै स्वाहा

ॐ भव्यायै स्वाहा

ॐ भविष्यायै स्वाहा

ॐ शैलजायै स्वाहा

ॐ शैलवासिन्यै स्वाहा

ॐ वाममार्गरतायै स्वाहा

ॐ वामायै स्वाहा

ॐ शिववामाङ्गवासिन्यै स्वाहा

ॐ वामाचारप्रियायै स्वाहा

ॐ तुष्टये स्वाहा

ॐ लोपामुद्राप्रबोधिन्यै स्वाहा

ॐ भूतात्मने स्वाहा

ॐ परमात्मने स्वाहा

ॐ भूतभव्यविभाविन्यै स्वाहा

ॐ मङ्गलायै स्वाहा

ॐ साधुशीलायै स्वाहा

ॐ परमार्थप्रबोधिकायै स्वाहा

ॐ दक्षिणायै स्वाहा

ॐ दक्षिणामूर्तये स्वाहा

ॐ सुदक्षिणायै स्वाहा

ॐ हरिप्रस्व्यै स्वाहा

ॐ योगिन्यै स्वाहा

ॐ योगयुक्तायै स्वाहा

ॐ योगाङ्गायै स्वाहा

ॐ ध्यानशालिन्यै स्वाहा

ॐ योगपट्टधरायै स्वाहा

ॐ मुक्तायै स्वाहा

ॐ मुक्तानांपरमागतये स्वाहा

ॐ नारसिंह्यै स्वाहा

ॐ सुजन्मने स्वाहा

ॐ त्रिवर्गफलदायिन्यै स्वाहा

ॐ धर्मदायै स्वाहा

ॐ धनदायै स्वाहा

ॐ एकायै स्वाहा

ॐ कामदायै स्वाहा

ॐ मोक्षदायै स्वाहा

ॐ द्युतये स्वाहा

ॐ साक्षिण्यै स्वाहा

ॐ क्षणदायै स्वाहा

ॐ दक्षायै स्वाहा

ॐ दक्षजायै स्वाहा

ॐ कोटि,रूपिण्यै स्वाहा

ॐ क्रतवे स्वाहा

ॐ कात्यायन्यै स्वाहा

ॐ स्वच्छायै स्वाहा

ॐ स्वच्छन्दायै स्वाहा

ॐ कविप्रियायै स्वाहा

ॐ सत्यागमायै स्वाहा

ॐ बहिःस्थायै स्वाहा

ॐ काव्यशक्तये स्वाहा

ॐ कवित्वदायै स्वाहा

ॐ मीनापुत्र्यै स्वाहा

ॐ सतीमात्रे स्वाहा

ॐ मेनाकभगिन्यै स्वाहा

ॐ तडिते स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ सौदामिन्यै स्वाहा६००

ॐ सुदामायै स्वाहा

ॐ सुधाम्ने स्वहा

ॐ धामशालिन्यै स्वाहा

ॐ सौभाग्यदायिन्यै स्वाहा

ॐ दिवे स्वाहा

ॐ सुभगायै स्वाहा

ॐ द्युतिवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ श्रीकृत्तिवसनायै स्वाहा

ॐ कङ्काल्यै स्वाहा

ॐ कलिन्नाशिन्यै स्वाहा

ॐ रक्तबीजवधोद्दृप्तायै स्वाहा

ॐ सुतन्तवे स्वाहा

ॐ बीजसन्ततये स्वाहा

ॐ जगज्जीवायै स्वाहा

ॐ जगद्बीजायै स्वाहा

ॐ जगत्त्रयहितैषिण्यै स्वाहा

ॐ चामीकररुचये स्वाहा

ॐ चान्द्र्यै स्वाहा

ॐ साक्षयायै स्वाहा

ॐ षोडशीकलायै स्वाहा

ॐ यत्तत्पदानुबन्धायै स्वाहा

ॐ यक्षिण्यै स्वाहा

ॐ धनदार्च्चितायै स्वाहा

ॐ चित्रिण्यै स्वाहा

ॐ चित्रमायायै स्वाहा

ॐ विचित्रायै स्वाहा

ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा

ॐ चामुण्डायै स्वाहा

ॐ मुण्डहस्तायै स्वाहा

ॐ चण्डमुण्डवधोद्धरायै स्वाहा

ॐ अष्टम्यै स्वाहा

ॐ एकादश्यै स्वाहा

ॐ पूर्णायै स्वाहा

ॐ नवम्यै स्वाहा

ॐ चतुर्दश्यै स्वाहा

ॐ अमायै स्वाहा

ॐ कलश्हस्तायै स्वाहा

ॐ पूर्णकुम्भप्रयोध्रायै स्वाहा

ॐ अभीरवे स्वाहा

ॐ भैरव्यै स्वाहा

ॐ भीरायै स्वाहा

ॐ भीमायै स्वाहा

ॐ त्रिपुरभैरव्यै स्वाहा

ॐ महारुण्डायै स्वाहा

ॐ रौद्र्यै स्वाहा

ॐ महाभैरवपूजितायै स्वाहा

ॐ निर्मुण्डायै स्वाहा

ॐ हस्तिन्यै स्वाहा

ॐ चण्डायै स्वाहा

ॐ करालदशनाननायै स्वाहा

ॐ करालायै स्वाहा

ॐ विकरालायै स्वाहा

ॐ घोरायै स्वाहा

ॐ घुर्घुरनादिन्यै स्वाहा

ॐ रक्तदन्तायै स्वाहा

ॐ ऊर्ध्वकेश्यै स्वाहा

ॐ बन्धूककुसुमारुणायै स्वाहा

ॐ कादम्बर्यै स्वाहा

ॐ पटासायै स्वाहा

ॐ काश्मीर्यै स्वाहा

ॐ कुङ्कम्ःप्रियायै स्वाहा

ॐ क्षान्तये स्वाहा

ॐ बहुसुवर्णायै स्वाहा

ॐ मतये स्वाहा

ॐ बहुसुवर्णदायै स्वाहा

ॐ मातङ्गिन्यै स्वाहा

ॐ वरारोहायै स्वाहा

ॐ मत्तमातङ्गगामिन्यै स्वाहा

ॐ हंसायै स्वाहा

ॐ हंसगतये स्वाहा

ॐ हंस्यै स्वाहा

ॐ हंसोज्ज्वलशिरोरुहायै स्वाहा

ॐ पूर्णचन्द्रमुख्यै स्वाहा

ॐ श्यामायै स्वाहा

ॐ स्मितास्यायै स्वाहा

ॐ श्यामकुन्तलायै स्वाहा

ॐ मष्यै स्वाहा

ॐ लेखन्यै स्वाहा

ॐ लेखायै स्वाहा

ॐ सुलेखायै स्वाहा

ॐ लेखकप्रियायै स्वाहा

ॐ शङ्खिन्यै स्वाहा

ॐ शङ्खहस्तायै स्वाहा

ॐ जलस्थायै स्वाहा

ॐ जलदेवतायै स्वाहा

ॐ कुरुक्षेत्रावनये स्वाहा

ॐ काश्यै स्वाहा

ॐ मथुरायै स्वाहा

ॐ काञ्च्यै स्वाहा

ॐ अवन्तिकायै स्वाहा

ॐ अयोध्यायै स्वाहा

ॐ द्वारिकामायायै स्वाहा

ॐ तीर्थायै स्वाहा

ॐ तीर्थकरप्रियायै स्वाहा

ॐ त्रिपुष्करायै स्वाहा

ॐ अप्रमेयायै स्वाहा

ॐ कोशस्थायै स्वाहा

ॐ कोशवासिन्यै स्वाहा

ॐ कौशिक्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ कुशावर्त्यै स्वाहा ७००

ॐ कोशाम्ब्यै स्वाहा

ॐ कोशवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ कोशदायै स्वाहा

ॐ पद्मकोशाक्ष्यै स्वाहा

ॐ कुसुम्भकुसुमप्रियायै स्वाहा

ॐ तोतुलायै स्वाहा

ॐ तुलाकोटये स्वाहा

ॐ कोटिस्थायै स्वाहा

ॐ कोटराश्रयायै स्वाहा

ॐ स्वयम्भुवे स्वाहा

ॐ सुरूपायै स्वाहा

ॐ रूपवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ तेजस्विन्यै स्वाहा

ॐ सुभिक्षायै स्वाहा

ॐ बलदायै स्वाहा

ॐ बलदायिन्यै स्वाहा

ॐ महाकोश्यै स्वाहा

ॐ महावर्तायै स्वाहा

ॐ बुद्ध्यै स्वाहा

ॐ सदसदात्मिकायै स्वाहा

ॐ महाग्रहहरायै स्वाहा

ॐ सौम्यायै स्वाहा

ॐ विशोकायै स्वाहा

ॐ शोकनाशिन्यै स्वाहा

ॐ सात्त्विक्यै स्वाहा

ॐ सत्त्वसंस्थायै स्वाहा

ॐ राजस्यै स्वाहा

ॐ रजोवृतायै स्वाहा

ॐ तामस्यै स्वाहा

ॐ तमोयुक्तायै स्वाहा

ॐ गुणत्रयविभाविन्यै स्वाहा

ॐ अव्यक्तायै स्वाहा

ॐ व्यक्तरूपायै स्वाहा

ॐ वेदविद्यायै स्वाहा

ॐ शाम्भव्यै स्वाहा

ॐ शम्भुकल्याणिन्यै स्वाहा

ॐ कल्पायै स्वाहा

ॐ मनःसङ्कल्पसन्तत्यै स्वाहा

ॐ सर्वलोकमयीशक्तये स्वाहा

ॐ सर्वश्रवणगोचरायै स्वाहा

ॐ सर्वज्ञानवत्यै स्वाहा

ॐ वाञ्छायै स्वाहा

ॐ सर्वतत्त्वावबोधिन्यै स्वाहा

ॐ जाग्रत्यै स्वाहा

ॐ सुषुप्तये स्वाहा

ॐ स्वप्नावस्थायै स्वाहा

ॐ तुरीयकायै स्वाहा

ॐ त्वरायै स्वाहा

ॐ मन्दगतये स्वाहा

ॐ मन्दायै स्वाहा

ॐ मदिरामोदधारिण्यै स्वाहा

ॐ पानभूमये स्वाहा

ॐ पानपात्रायै स्वाहा

ॐ पानदानकरोद्यतायै स्वाहा

ॐ अघूर्णारुणनेत्रायै स्वाहा

ॐ किञ्चिद्व्यक्तभाषिण्यै स्वाहा

ॐ आशापूरायै स्वाहा

ॐ दीक्षायै स्वाहा

ॐ दीक्षितपूजितायै स्वाहा

ॐ नागवल्ल्यै स्वाहा

ॐ नागकन्यायै स्वाहा

ॐ भोगिन्यै स्वाहा

ॐ भोगवल्लभायै स्वाहा

ॐ सर्वशास्त्रवतीविद्यायै स्वाहा

ॐ सुस्मृतये स्वाहा

ॐ धर्मवादिन्यै स्वाहा

ॐ श्रुतये स्वाहा

ॐ श्रुतिधरायै स्वाहा

ॐ ज्येष्ठायै स्वाहा

ॐ श्रेष्ठायै स्वाहा

ॐ पाताल्वासिन्यै स्वाहा

ॐ मीमांसायै स्वाहा

ॐ तर्कविद्यायै स्वाहा

ॐ सुभक्तये स्वाहा

ॐ भक्त्वत्सलायै स्वाहा

ॐ सुनाभये स्वाहा

ॐ यातनायै स्वाहा

ॐ जात्यै स्वाहा

ॐ गम्भीरायै स्वाहा

ॐ अभाव्वर्जितायै स्वाहा

ॐ नागपाशधरामूर्तये स्वाहा

ॐ अगाधायै स्वाहा

ॐ नागकुण्डलायै स्वाहा

ॐ सुचक्रायै स्वाहा

ॐ चक्रमध्यस्थायै स्वाहा

ॐ चक्रकोणनिवासिन्यै
स्वाहा

ॐ सर्वमन्त्रमयी विद्यायै स्वाहा

ॐ सर्वमन्त्राक्षरावलये स्वाहा

ॐ मधुस्रवायै स्वाहा

ॐ स्रवन्त्यै स्वाहा

ॐ भ्रामर्यै स्वाहा

ॐ भ्रमरालकायै स्वाहा

ॐ मातृमण्डलमध्यस्थायै
स्वाहा

ॐ मातृमण्डलवासिन्यै स्वाहा

ॐ कुमारजनन्यै स्वाहा

ॐ क्रूरायै स्वाहा

ॐ सुमुख्यै स्वाहा

ॐ ज्वरनाशिन्यै स्वाहा

ॐ अतीतायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ विद्यमानायै स्वाह८००

ॐ भाविन्यै स्वाहा

ॐ प्रीतिमञ्जर्यै स्वाहा

ॐ सर्वसौख्यवतीयुक्त्यै स्वाहा

ॐ आहारपरिणामिन्यै स्वाहा

ॐ पञ्चभूतानांनिधानायै स्वाहा

ॐ भवसागरतारिण्यै स्वाहा

ॐ अक्रूरायै स्वाहा

ॐ ग्रहवत्यै स्वाहा

ॐ विग्रहायै स्वाहा

ॐ ग्रहवर्जितायै स्वाहा

ॐ रोहिण्यै स्वाहा

ॐ भूमिगर्भायै स्वाहा

ॐ कालभुवे स्वाहा

ॐ कालवर्जितायै स्वाहा

ॐ कलङ्करहितायै स्वाहा

ॐ नार्यै स्वाहा

ॐ चतु:षष्ट्यभिधावत्यै
स्वाहा

ॐ जीर्णायै स्वाहा

ॐ जीर्णवस्त्रायै स्वाहा

ॐ नूतनायै स्वाहा

ॐ नववल्लभायै स्वाहा

ॐ अजरायै स्वाहा

ॐ नियत्यै स्वाहा

ॐ प्रीत्यै स्वाहा

ॐ अतिरागविवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ पञ्चवातगतेर्भिन्नायै स्वाहा

ॐ पञ्चश्लेष्माशयाधरायै स्वाहा

ॐ पञ्चपित्तवतीपङ्क्त्यै स्वाहा

ॐ पञ्चस्थानविभाविन्यै स्वाहा

ॐ ऋतुमत्यै स्वाहा

ॐ कामवत्यै स्वाहा

ॐ बहिःप्रस्त्रविण्यै स्वाहा

ॐ त्र्यहायै स्वाहा

ॐ रजःशुक्रधराशक्तये स्वाहा

ॐ जरायवे स्वाहा

ॐ गर्भधारिण्यै स्वाहा

ॐ त्रिकालज्ञायै स्वाहा

ॐ त्रिलिङ्गायै स्वाहा

ॐ त्रिमूर्तये स्वाहा

ॐ पुरवासिन्यै स्वाहा

ॐ अरागायै स्वाहा

ॐ शिवतत्त्वायै स्वाहा

ॐ कामतत्त्वानुरागिण्यै स्वाहा

ॐ प्राच्यै स्वाहा

ॐ अवाच्यै स्वाहा

ॐ प्रतीचीदिशे स्वाहा

ॐ उदीचीदिशे स्वाहा

ॐ विदिग्दिशे स्वाहा

ॐ अहङ्कृतये स्वाहा

ॐ अहङ्कारायै स्वाहा

ॐ बालमायायै स्वाहा

ॐ बलिप्रियायै स्वाहा

ॐ स्त्रुचे स्वाहा

ॐ स्त्रुवायै स्वाहा

ॐ सामिधेन्यै स्वाहा

ॐ सुश्रद्धायै स्वाहा

ॐ श्राद्धदेवतायै स्वाहा

ॐ मात्रे स्वाहा

ॐ मातामह्यै स्वाहा

ॐ तृप्तये स्वाहा

ॐ पितृमात्रे स्वाहा

ॐ पितामह्यै स्वाहा

ॐ स्नुषायै स्वाहा

ॐ दौहित्रिण्यै स्वाहा

ॐ पुत्र्यै स्वाहा

ॐ पौत्र्यै स्वाहा

ॐ नप्त्र्यै स्वाहा

ॐ शिशुप्रियायै स्वाहा

ॐ स्तनदायै स्वाहा

ॐ स्तनधारायै स्वाहा

ॐ विश्वयोनये स्वाहा

ॐ स्तनन्धय्यै स्वाहा

ॐ शिशूत्सङ्गधरायै स्वाहा

ॐ दोलायै स्वाहा

ॐ दोलाक्रीडाभिनन्दिन्यै स्वाहा

ॐ उर्वश्यै स्वाहा

ॐ कदल्यै स्वाहा

ॐ केकायै स्वाहा

ॐ विशिखायै स्वाहा

ॐ शिखिवर्तिन्यै स्वाहा

ॐ खट्वाङ्गधारिण्यै स्वाहा

ॐ खट्वायै स्वाहा

ॐ बाणपुङ्खानुवर्तिन्यै स्वाहा

ॐ लक्ष्यप्राप्तये स्वाहा

ॐ काललक्ष्यायै स्वाहा

ॐ लक्ष्यायै स्वाहा

ॐ शुभलक्षणायै स्वाहा

ॐ वर्तिन्यै स्वाहा

ॐ सुपथाचारायै स्वाहा

ॐ परिखायै स्वाहा

ॐ खनिर्वृतये स्वाहा

ॐ प्रकारवलयायै स्वाहा

ॐ वेलायै स्वाहा

ॐ महोदधिमर्यादायै स्वाहा

ॐ पोषण्यै स्वाहा

ॐ शोषणीशक्तये स्वाहा

ॐ दीर्घकेश्यै स्वाहा

ॐ सुलोमशायै स्वाहा

ॐ ललितायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ मांसलायै स्वाहा१००

ॐ तन्व्यै स्वाहा

ॐ वेदवेदाङ्गधारिण्यै स्वाहा

ॐ नरासृक्पानमत्तायै स्वाहा

ॐ नरमुण्डास्थिभूषणायै स्वाहा

ॐ अक्षक्रीडारतये स्वाहा

ॐ शार्यै स्वाहा

ॐ शारिकायै स्वाहा

ॐ शुकभाषिण्यै स्वाहा

ॐ शाम्बर्यै स्वाहा

ॐ गारुडीविद्यायै स्वाहा

ॐ वारुण्यै स्वाहा

ॐ वरुणार्चितायै स्वाहा

ॐ वाराह्यै स्वाहा

ॐ तुण्डहस्तायै स्वाहा

ॐ दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरायै स्वाहा

ॐ मीनमूर्तिधरायै स्वाहा

ॐ मूर्तायै स्वाहा

ॐ वदान्यायै स्वाहा

ॐ प्रतिमाश्रयायै स्वाहा

ॐ अष्टमूर्त्तये
निधीशायै स्वाहा

ॐ शालिग्रामशिलायै स्वाहा

ॐ स्त्रुतये स्वाहा

ॐ स्मृतये स्वाहा

ॐ संस्काररूपायै स्वाहा

ॐ सुसंस्कारायै स्वाहा

ॐ संस्कृतये स्वाहा

ॐ प्राकृतायै स्वाहा

ॐ देशभाषायै स्वाहा

ॐ गाथायै स्वाहा

ॐ गीत्यै स्वाहा

ॐ प्रहेलिकायै स्वाहा

ॐ इडायै स्वाहा

ॐ पिङ्गलायै स्वाहा

ॐ पिङ्गायै स्वाहा

ॐ सुषुम्णायै स्वाहा

ॐ सूर्यवाहिन्यै स्वाहा

ॐ शशिस्रवायै स्वाहा

ॐ तालुस्थायै स्वाहा

ॐ काकिन्यै स्वाहा

ॐ मृतज़ीविन्यै स्वाहा

ॐ अणुरूपायै स्वाहा

ॐ बृहद्रूपायै स्वाहा

ॐ लघुरूपायै स्वाहा

ॐ गृरुस्थिरायै स्वाहा

ॐ स्थावरायै स्वाहा

ॐ जङ्गमादेव्यै स्वाहा

ॐ कृतकर्मफलप्रदायै स्वाहा

ॐ विषयाक्रान्तदेहायै स्वाहा

ॐ निर्विशेषायै स्वाहा

ॐ जितेन्द्रियायै स्वाहा

ॐ विश्वरूपायै स्वाहा

ॐ चिदानन्दायै स्वाहा

ॐ परंब्रह्मप्रबोधिन्यै स्वाहा

ॐ निर्विकारायै स्वाहा

ॐ निर्वैरायै स्वाहा

ॐ विरत्यै स्वाहा

ॐ सत्त्ववर्धिन्यै स्वाहा

ॐ पुरुषायै स्वाहा

ॐ अज्ञानभिन्नायै स्वाहा

ॐ भ्रान्तये स्वाहा

ॐ कैवल्यदायिन्यै स्वाहा

ॐ विविक्तसेविन्यै स्वाहा

ॐ प्रह्वायै स्वाहा

ॐ जनयित्र्यै स्वाहा

ॐ बहुश्रुतये स्वाहा

ॐ निरीहायै स्वाहा

ॐ समस्तेहायै स्वाहा

ॐ सर्वलोकैकसेवितायै स्वाहा

ॐ सेवायै स्वाहा

ॐ सेवाप्रियायै स्वाहा

ॐ सेव्यायै स्वाहा

ॐ सेवाफलविवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ कलौकल्किप्रियायै स्वाहा

ॐ काल्यै स्वाहा

ॐ दुष्टम्लेच्छविनाशिन्यै स्वाहा

ॐ प्रत्यञ्चायै स्वाहा

ॐ धनुर्यष्ट्यै स्वाहा

ॐ खड्गधारायै स्वाहा

ॐ दुरानतये स्वाहा

ॐ अश्व्प्लुतये वल्गायै स्वाहा

ॐ सृणये स्वाहा

ॐ सन्मत्त्वारुणायै स्वाहा

ॐ वीरभुवे स्वाहा

ॐ वीरमात्रे स्वाहा

ॐ वीरसुवे स्वाहा

ॐ वीरनन्दिन्यै स्वाहा

ॐ जयश्रिये स्वाहा

ॐ जयदीक्षायै स्वाहा

ॐ जयस्थायै स्वाहा

ॐ जयवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ सौभाग्यसुभगाकारायै
स्वाहा

ॐ सर्वसौभाग्यवर्धिन्यै स्वाहा

ॐ क्षेमङ्कर्यै स्वाहा

ॐ सिद्धिरूपायै स्वाहा

ॐ सत्कीर्त्तये स्वाहा

ॐ पंथिदेवतायै स्वाहा

ॐ सर्वतीर्थमयीमूर्तये स्वाहा

ॐ सर्वदेवमयीप्रभायै स्वाहा

ॐ सर्वसिद्धिप्रदाशक्तये
स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ सर्वमङ्गलमङ्गलायै
स्वाहा १०००

हमारी पुस्तकें मिलेंगी

KASHMIRI SAMITI
Kashmir Bhawan Marg, Amar Colony, Lajpat Nagar-IV, New Delhi, Ph. : 6433399, 6465280

TANEJA ELECTRONICS & TENT HOUSE
Kashmiri Catering & Decurators Raghunath Mandir, Amar Colony, Lajpat Nagar, New Delhi Phone : 6429046

BRAHAM PUTRA COMPLEX
Shop No. 45, Sector-29, NOIDA Ph. : 8539338

D. P. B. PUBLICATIONS
110, Chowk Barshahbulla, Chawri Bazar, Delhi-6
Phone : 3273220

VIJAYASHWAR DHARMIK PUSTAK BHANDAR
Talab-Tilo, Jammu, Phone : 555763

J. K. BOOK SHOP
Talab-Tilo, Jammu, Phone : 554522

VEER HOUSE
Sarwal Chowk, Jammu

GUPTA STATIONERY STORE
City Chowk, Jammu

NAND LAL & SONS
Pacca Danga, Jammu

TRINITY STATIONERS
Pacca Danga, Jammu

KIRAN STATIONERY STORE
Gandhi Nagar, Jammu

AMAR STATIONERY STORE
Gandhi Nagar, Jammu

SANJAY STATIONERY STORE
Rehadi, Jammu

BHARAT PUSHTKALYA
Jewel Chowk, Jammu

VIRENDER BOOK STALL
Canal Road, Jammu

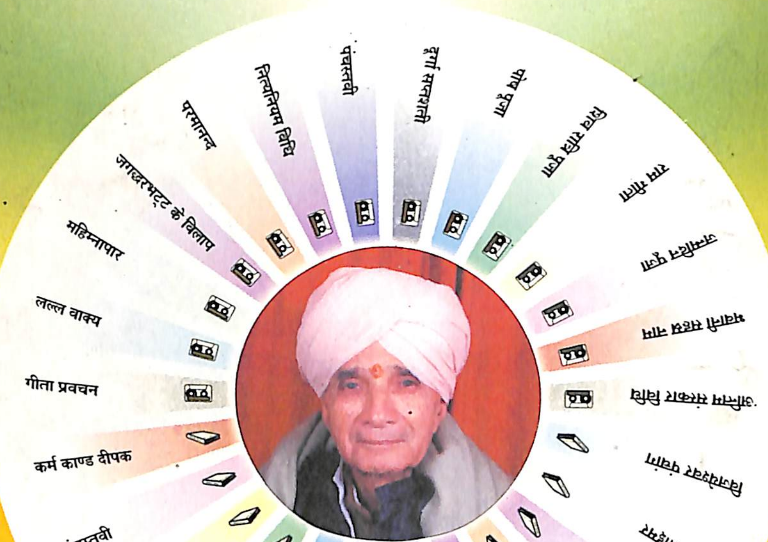
UNIVERSAL NEWS AGENCIES
Mukherjee Bazar, Udhampur

AJU BOOK CENTER
Gandhi Nagar, Jammu

ॐ

विजयेश्वर कैसट्स तथा प्रकाशन

स्व. प्रेम नाथ शास्त्री की ज़बान से



विजयेश्वर पंचांग कार्यालय

अजीत कालोनी
गोल गुजराल जम्मू
Ph. : 555607